

सुमन

(29वां अंक वार्षिक पत्रिका 2022)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I), तमில்நாடு



सत्यराज मठातेराज (लंगारीका-१)
काव्यान निदेशक (वापर आमदार)
सत्यराज मठातेराज (लंगारीका-२)

कै तालुकावाने

संवेद समारोह - २०२१





संदेश

हमारी हिन्दी गृहपत्रिका “सुमन” का उनतीसवां अंक आपको सौंपते हुए मुझे बेहद खुशी महसूस हो रही है। राजभाषा हिन्दी के प्रति उत्साहपूर्ण रवैया दर्शाती “सुमन” का अविरल प्रयास राष्ट्रगरिमा एवं सर्वात्मक भावना का सकारात्मक आविष्कार है।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के पदधारियों द्वारा संवैधानिक दायित्व एवं राष्ट्रीय अखण्डता का घोतक है “सुमन”। इसलिए “सुमन” के सभी तूलिकाकारों को बधाई एवं आप सभी को आज्ञादी के अमृतमहोत्सव के साथ राजभाषा दिवस की शुभकामनाएं।

रा. अ
म्बलवाणन

आर. अम्बलवाणन
प्रधान महालेखाकार



संपादकीय



हमारे कार्यालय सदस्यों के बहुमूल्य योगदान, हिन्दी के प्रति रुचि एवं भारतीय संविधान के प्रति गरिमामय गौरव के फलस्वरूप “सुमन” गृहपत्रिका उनतीसवां चरण पूरा कर रही है। राष्ट्रगरिमा एवं सर्वात्मक भावना का संगम होती है हिन्दी गृहपत्रिकाएं। इसलिए इस उपलब्धि को रचनाओं से आभूषित करने में योगदान दिए सभी कार्यालय सदस्यों को साधुवाद एवं शुभकामनाएं।

अब्राहम

अब्राहम जे. शोफॉस
उपमहालेखाकार / प्रशासन

हिंदी अधिकारी की लेखनी से



भारत देश ही इकलौता देश हो सकता है जिसके तीन नाम हैं। "सिंध देश" से हिन्दुस्तान जो संस्कृति व धरोहर का प्रतिनिधित्व करता है। "भारत" जो है राजतंत्रीय (वंश) परंपरा का घोतक है। तीसरा "इण्डिया" - हमें अंग्रेजी काल की देन है।

हिंदी हमारे देश की राजभाषा सर्व-सम्मति से ही बनी, न कि एक मत से। संविधान सभा में कुछ राय भिन्न थीं तो वह अंकों के प्रयोग को लेकर थीं। "देवनागरी या अंतर्राष्ट्रीय रूप" को लेकर था-जो उप समिति के अध्यक्ष श्री गोविन्द वल्लभ पन्त के कीमती मत पर आधारित बहुमत को पाई।

मलयालम कविराज स्वातितिरूनाळ (1813) ने हिंदी में कई कविताएं व नाटक लिखे हैं। दक्षिण में हिंदी का आगमन अल्लाउद्दीन खिलजी द्वारा 1296 के आक्रमण पश्चात हुआ।

14वीं सदी में ही अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा, बरीदशाही जैसे राज्यों ने अपनी राजभाषा हिंदी बनाई। "हिन्दुस्तानी लैग्वेज" नामक पहला हिंदी ग्रामर 1698 में जॉन जोशना केटलर ने लिखा। ऐसी परंपरा पुरातन इतिहास में हिंदी की रही है। तमिल और हिंदी के समान शब्द, समान रूप एवं समान अर्थ में प्रयुक्त होने वाले कई हैं, क्योंकि संस्कृत निष्ठ हैं, जैसे दानम (दान), विद्वान (विद्वान), रातिरि (रात्रि), विमानम (विमान), पूजै (पूजा), उपदेशम (उपदेश) आदि।

संघ शासित अंडमान एवं निकोबार ने प्रबल एकता का प्रतीक दर्शाया है। विभिन्न धर्म, संस्कृति, भाषा व आस्थाओं के रहते वहां की जनता ने "पूरे क्षेत्र के लिए एक भाषा" के रूप में हिंदी को अपनाया है।

डॉ जयन्ति प्रसाद नॉटियाल ने अपने शोधों के उपरान्त वर्ष 2015 में पाया कि हिंदी जानने वालों की संख्या विश्व में मांदारिन भाषा (चीन) से भी अधिक है। इसलिए प्रथम एवं सबसे लोकप्रिय है हिंदी।

संविधान की आठवीं अनुसूची में जो भाषाएं हैं उनमें संस्कृत, कश्मीरी व सिंधी को छोड़, शेष सभी भाषाएं किसी न किसी राज्य की राजभाषाएं हैं।

उन्हीं से पनपता संवर्द्धित होती आगे बढ़ती हमारी शान हिंदी, प्रगति पथ पर अग्रसर है।

जय हिन्द! जय हिन्दी!!

पत्रिका परिवार

मार्ग दर्शक

श्री रा. अम्बलवाणन

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

परामर्शदाता

श्री अब्राहम जूदाह शेफास ए.

उप महालेखाकार (प्रशासन)

संयोजक

श्री आर. गिरि प्रसाद

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

संपादक मंडल

सुश्री बिबी टी. मांजूरान, हिन्दी अधिकारी

श्रीमती एस. अभयाम्बाल, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

श्री राम लखन मीना, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

श्री पंकज शर्मा, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

श्री लक्ष्मी नारायण प्रसाद, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रत्याख्यान:

इस गृहपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में जितने विचार हैं वह केवल रचनाकारों के अपने मात्र हैं। इसलिए इन्हें सृजनात्मकता के दृष्टि से पढ़ने की कृपा करें। रचनाओं की मौलिकता का दायित्व भी रचनाकारों तक सिमित रहेगा।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	श्री/श्रीमती/कुमारी
1.	विद्यार्थी के कर्तव्य	आशा रामकृष्णन/सहायक पर्यवेक्षक
2.	एकाएक विचार	ए.ल. अभिरामी/वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
3.	बुद्ध का ध्यान	अखिलेश/लेखापरीक्षक
4.	नई शिक्षा नीति 2020	हर्ष कुमार/लेखापरीक्षक
5.	एक कहानी इनसानियत की	आर. श्रीविद्या/वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
6.	फिल्म समीक्षा – शिंडलस् लिस्ट	लक्ष्मी नारायण प्रसाद/वरिष्ठ लेखापरीक्षक
7.	जैविक कृषि: लाभकारी खेती की पहल	राम लखन मीना/कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
8.	पिता का समाज व पुत्रों के नाम पत्र	रवि कुमार-II/लेखापरीक्षक
9.	माँ का आँचल	आशा रामकृष्णन/सहायक पर्यवेक्षक
10.	आओं बातें चाँद की करते हैं	अखिलेश/लेखापरीक्षक
11.	सेलुलर वर्ल्ड	आर. श्रीविद्या/वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
12.	आजादी का “अमृत महोत्सव”	हर्ष कुमार/लेखापरीक्षक
13.	कौवा क्या जाने मोती का मोल	लक्ष्मी नारायण प्रसाद/वरिष्ठ लेखापरीक्षक
14.	अध्ययन का आनन्द	आशा रामकृष्णन/सहायक पर्यवेक्षक
15.	ईश्वर के दूत	आर. श्रीविद्या/वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
16.	भारत में लड़कियों के लिए पहला स्कूल	अखिलेश/लेखापरीक्षक
17.	येलागिरी की मनोरम यात्रा	हर्ष कुमार/लेखापरीक्षक
18.	गुरु-शिष्य	रवि कुमार-II/लेखापरीक्षक
कल्याण अनुभाग गतिविधियाँ : 2021-22		
लोट पोट		रवि कुमार-II/ लेखापरीक्षक

पत्रिका का मनोनयन श्री लक्ष्मी नारायण प्रसाद, व.लेप द्वारा किया गया



विद्यार्थी के कर्तव्य

आशा रामकृष्णन
सहायक पर्यवेक्षक

विद्यार्थी जीवन पर ही मनुष्य का भविष्य निर्भर है। आज का विद्यार्थी कल के देश का कर्णधार होता है। इसलिए विद्यार्थी को अपने दायित्व और कर्तव्यों का सजग होकर पालन करना चाहिए।

विद्यार्थी का सबसे प्रथम कर्तव्य शिक्षा प्राप्त करना है। शिक्षा प्राप्ति के दौरान उसे अपनी समस्त क्षमताओं का पूर्ण विकास करना चाहिए। भगवान ने मानव को चार प्रकार की शक्तियां दी हैं – शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक। विद्यार्थी का कर्तव्य है कि वह इन सबको पूरा कर अपने जीवन का निर्माण करे। एक आदर्श विद्यार्थी को सभी सुख और आराम त्याग कर अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए तपस्वी का सा जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

विद्यार्थी का कर्तव्य है कि वह प्रधानाचार्य और गुरुजनों द्वारा बनाए गए नियमों को अनुशासनबद्ध होकर पालन करें। अनुशासन जीवन में सफलता की पहली शर्त है। समय का सदुपयोग जो विद्यार्थी सीख लेता है वह जीवन में कभी असफल नहीं होता। उसे अपने मानसिक और बौद्धिक विकास कर सके क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा निवास करती है और जब मनुष्य की आत्मिक शक्ति प्रबल होती है तो वह जीवन की हर बाधा दूरकर अपने उद्देश्य को पूरा करने में सफल हो जाता है।

विद्यार्थी में विनयशीलता होनी चाहिए। अपने अध्यापकों के प्रति आदर और श्रद्धा भाव रख कर ही उनसे ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

इसके अतिरिक्त विद्यार्थी को सुशील, सच्चरित्र, परिश्रमी, ईमानदार और सजग होना चाहिए। विनयशीलता और सच्चरित्रता से जीव में हर व्यक्ति को प्रभावित किया जा सकता है। अपने लक्ष्य और दायित्व के प्रति ईमानदार होना उनका कर्तव्य है। सादा जीवन, उच्च विचार रख कर विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

विद्यार्थी का कर्तव्य है कि बड़ा होकर आदर्श पड़ोसी और नागरिक बनकर समाज को कुछ स्थायी देन अर्पित करें और राष्ट्रनिर्माण में सहयोग दें।

अंत में मैं यह कहना चाहती हूँ कि भारत में प्रत्येक विद्यार्थी से यह आशा की जाति है कि वह जीवन का सदुपयोग कर अपना सर्वांगीण विकास करे तथा सजग रह कर अपने परिवार, पड़ोस, समाज एवं राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का पालन करे, तभी देश अनेक समस्याओं से मुक्त हो सकता है, क्योंकि आज का विद्यार्थी ही कल के भारत के कर्णधार होंगे। जिस देश में सभी विद्यार्थी अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहेंगे वह देश संसार में सबसे अधिक सुसंस्कृत, विकसित और सम्पन्न देश होगा इसमें संदेह नहीं।

\$\$\$\$\$



एकाएक विचार

एल. अभिरामी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हर एक व्यक्ति अपने जीवन में कई यात्राएँ की होगी । चाहे वो यात्रा कम दूरी की हो या लम्बी दूरी की..... । हर एक यात्रा से हमें कुछ न कुछ नया सीख जरूर मिलता है । जब मैं आफ़िस के लिए बाइक से यात्रा करती हूँ तब मुझे बहुत सारे लोगों को देखने का मौका मिलता है । जब भी किसी ट्राफ़िक सिग्नल पर रुकती हूँ तो आसपास के लोगों को देखने पर विचार करती हूँ कि हर एक व्यक्ति किसी न किसी कारण से वहाँ खड़ा है । विभिन्न प्रकार के लोगों को हम देख सकते हैं । कोई छोटा बच्चा बाइक पर पीछे बैठकर अपने पिता का पेट पकड़कर बैठा रहता है, तो कोई लड़की अपनी माँ से बातचीत करती हुई मुस्कुरा रही है । कुछ लड़के अपने बाल की तरफ ध्यान देते हैं तो कुछ लोग सिग्नल पार करने में ध्यान देते हैं । कोई मोबाइल पर बात करता है तो कोई हेडफोन पर गाना सुनता दिखाई पड़ता है तो कुछ लोग मेरी ही तरह दूसरे को देखते रहते हैं । हर एक व्यक्ति अपनी अपनी दुनिया में मग्न है और ये जो शेयर-ऑटोवाले हैं वह कहाँ रुकेगा ये तो भगवान् भी अंदाजा नहीं लगा सकता है ।

अगर हम बस से या रेलगाड़ी से सफर करें तो भी हम विभिन्न प्रकार के लोगों को देख सकते हैं । जब मैं मैट्रों रेल से सफर करती हूँ तो मैंने देखा है कि कॉलेज जाने वाले लड़के-लड़कियाँ हमेशा उत्साह युक्त दिखते हैं और मज़ाक उड़ाकर खुशी से बातें करते रहते हैं । अगर कोई छोटा बच्चा आता है तो वह बहुत खुश हो जाता है और रेल को आश्यर्य से देखने लगता है । दफ्तर जाने वाले लोग अपने कार्यालय में होने वाली घटनाओं का चर्चा करते हैं । कुछ लोग धीमी आवाज में मोबाइल पर बात करते हैं तो कुछ लोग ऊँची आवाज में। कुछ लोग तेज़ दैड़ कर ट्रेन पकड़ते हैं तो कुछ का दौड़ने पर भी ट्रेन छूट जाता है । हर यात्रा एक नया अनुभव है ।

उसी प्रकार जब हम बच्चों को स्कूल से वापस लाने के लिए जाते हैं वहाँ भी विभिन्न प्रकार की घटनाएँ देख सकते हैं घंटी बजने पर छोटे बच्चे खुशी से दौड़कर बाहर भागते हैं तो कुछ बच्चे एक दूसरे का थैला पकड़कर भागते हैं तो कुछ बच्चे अपने लंच बैग को गेंद बनाकर आसमान में फेंकते हुए खेलते हैं । कुछ बच्चे अपने माँ-पिता को देखकर खुशी से दौड़ते हैं तो कुछ बच्चे वेन ड्राइवर के पीछे चलते हैं । वहाँ खड़े होकर इन मासूस बच्चों को देखने पर जो भी

उदासी हमारे मन में थी वह तो तब गायब हो जाता है और हम भी मुस्कुराने लगते हैं। हम जहाँ भी जाते हैं अगर हम अपने आसपास के लोगों को देखते रहें तो हमेशा हमें कुछ न कुछ सीख जरूर मिलेगा। उसी प्रकार मैंने कई बार यात्रा के समय अपरिचित लोगों की दयालता को देखा है। बूढ़े लोगों को देखकर उनको अपना सीट देना, कोई दौड़कर आनेवाले व्यक्ति के लिए लिफ्ट का बटन दबाकर प्रतीक्षा करना, किसी के सिग्नल पार करने में मदद करना, ऐसी कई घटनाएं मैंने देखा है जो यह पाठ सिखाता है कि हमें एक दूसरे की मदद करना चाहिए और वह भी बदले में कुछ भी उम्मीद किए बिना। ऐसा करना तो मुश्किल लग सकता है, लेकिन नामुम्किन नहीं।

कई लोग अपने दयालुता से हमारे मन जान लेते हैं। किसी ने सही ही कहा है कि दयालुता से किया गया कोई भी कार्य, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, कभी व्यर्थ नहीं जाता।

इस तेज दुनिया में जहाँ हमे कभी-कभी रुकना है और जिंदगी में आने वाली छोटी-छोटी खुशियों का आनंद लेना है। हमारी खुशी, किसी घटना पर निर्भर नहीं होनी चाहिए। हम जैसे हैं, वैसे ही खुश रहना, आशीर्वादों के लिए आभारी रहना चाहिए। खुश रहें और एक दूसरें को भी खुश रहने दें।





बुद्ध का ध्यान

अखिलेश
लेखापरीक्षक

एक जिज्ञासु व्यक्ति, एक दिन बुद्ध के पास आया। उसका नाम देवदत्त था, वह एक प्रसिद्ध विद्वान था, वह अपने 500 शिष्यों के साथ आया था। निश्चित ही उसके पास बहुत सारे प्रश्न थे, वह बुद्ध को परखने आया था। वह अपनी अनेकों समस्याएं लेकर आया था। बुद्ध ने उसके चेहरे की तरफ देखा और कहा..... देवदत्त एक शर्त है। यदि तुम शर्त पूरी करो, केवल तभी मैं उत्तर दे सकता हूँ।

एक वर्ष तक प्रतीक्षा करो, ध्यान करो, मौन रहो। जब तुम्हारे भीतर का शोरगुल रुक जाए, तब तुम कुछ भी पूछना और मैं उत्तर दूँगा। यह मैं वचन देता हूँ।

देवदत्त कुछ चिंतित हुआ – एक वर्ष मौन रहना है और तब यह व्यक्ति उत्तर देगा, और कौन जाने कि वे उत्तर सही भी है या नहीं! हो सकता है 1 वर्ष बेकार जाए। क्या करना चाहिए? वह इस दुविधा में पड़ गया और तभी बुद्ध का एक दुसरा शिष्य, सारिपुत्र जोर से हंसने लगा। इससे देवदत्त और भी परेशान हो गया और उसने सारिपुत्र से पुछा – बात क्या है? तुम क्यों हँस रहे हो?

सारिपुत्र ने कहा “ इनकी मत सुनना। ये बहुत धोखेबाज है, इन्होंने मुझे भी धोखा दिया। जब मैं आया था मेरे 5 हजार शिष्य थे तुम्हारे तो केवल 500 है। मैं बड़ा विद्वान था। मेरी बहुत ख्याति थी। इन्होंने मुझे फुसला लिया- इन्होंने मुझे भी साल भर प्रतीक्षा करने एवं, ध्यान लगाने को कहा, फिर कुछ पूछना, मैं उत्तर दूँगा। और साल भर बाद कोई प्रश्न बचा ही नहीं तो मैंने कुछ पूछा ही नहीं और उन्होंने कोई उत्तर दिया ही नहीं। यदि तुम पूछना चाहते हो तो अभी पूछ लो। मैं इसी चक्कर में पड़ गया।

तभी बुद्ध ने कहा “मैं अपने वचन पर पक्का रहूँगा। मैं तुम्हारे सभी सवालों के उत्तर दूँगा, अगर तुम पूछोगे तो, यदि तुम नहीं पूछते तो मैं क्या कर सकता हूँ।” अंत में देवदत्त ने शर्त स्वीकार की क्योंकि उसे प्रश्नों के उत्तर चाहिए थे। वह ध्यान में उत्तर गया और मौन होता गया। ऐसे एक वर्ष बीत गया। भीतर की बातचीत समाप्त हो गयी और भीतर का कोलाहल भी रुक गया। वह बिल्कुल भूल गया कि कब एक वर्ष बीत गया। कौन फिक्र करता है! जब प्रश्न के उत्तर स्वयं मिलने लगे। जब प्रश्न ही न रहें तो कौन उत्तरों की फिक्र करता है!

वर्ष के अंतिम दिन बुद्ध ने कहा – यह वर्ष का अंतिम दिन है, मैंने तुम्हें वचन दिया था कि एक वर्ष बाद तुम जो पूछोगे मैं उत्तर दूँगा। अब मैं उत्तर देने को तैयार हूँ अब तुम प्रश्न पूछो।

देवदत्त हसने लगा और उसने कहा “वह सारिपुत्र ठीक कहता था आपने मुझे भी धोखा दिया है अब कोई प्रश्न ही पुछने को लिए नहीं रहा, तो मैं क्या पूँछूँ? अब मेरा मन शांत हो चुका है अब मैं जान चुका हूँ की ध्यान ही बुद्धत्व है।

\$\$\$\$\$



नई शिक्षा नीति 2020

हर्ष कुमार
लेखापरीक्षक

नई शिक्षा नीति को 29 जुलाई 2020 को लागू किया गया जिसे 34 वर्षों के बाद लाया गया है। समय के साथ शिक्षा नीति में परिवर्तन भी आवश्यक होता है ताकि देश की तेजी से उन्नति हो सके। पुरानी शिक्षा नीति में बदलाव कर आने वाली पीढ़ियों को मानसिक और बौद्धिक स्तर पर और अधिक प्रबल करना है जिससे कि हमारा देश तेजी से तरक्की कर सके क्योंकि कहा जाता है कि सिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार होता है जिससे आप दुनिया को बदल सकते हैं, इसलिए समय के साथ – साथ नई शिक्षा नीति को लागू करना भी आवश्यक होता है।

नई शिक्षा नीति का पाठ्यक्रम नई शिक्षा नीति में 10+2 के पाठ्यक्रम को समाप्त करके अब 5+3+3+4 मॉडल तैयार किया गया है जिसमें पहले 5 साल के अध्ययन को फाउंडेशन स्टेज के रूप में माना जाता है। इसके साथ ही अब छात्रों को कक्षा 9वीं में ही विषय का चयन करने का विकल्प भी दिया जाएगा और साथ ही प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा को प्राथमिकता दी जाएगी।

यह स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। इसके पहले 1968 में इंदिरा गाँधी के द्वारा एवं 1986 में राजीव गाँधी के द्वारा नई शिक्षा नीति लागू की गई थी। इस नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के जीवन को और भी सशक्त बनाना है। इसमें विद्यार्थी अपने विषय सूची के अनुरूप शिक्षण प्राप्त कर सकता है। इस शिक्षा नीति में स्थानीय भाषा को भी सम्मिलित किया गया है जिसमें कि अब विद्यार्थी अपनी स्थानीय भाषा में भी अध्ययन कर सकता है। इस शिक्षा नीति में मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है।

पुरानी शिक्षा नीति वर्तमान में उतनी प्रभावी नहीं थी जिसका मूल आधार विद्यार्थियों को सिखाना था न कि गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करना था जो कि वर्तमान के अनुरूप नहीं था। जिस कारण से नई शिक्षा को लागू करना अत्यंत ही आवश्यक हो गया था क्योंकि पूरा विश्व तेजी से शिक्षा नीति लागू करें और विद्यार्थी युवाओं को शिक्षित करके देश के विकाश में भागीदार बनाए।

इसके साथ ही पुरानी शिक्षा नीति का दृष्टिकोण एक ही दिशा में था, जिसके कारण विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुरूप विषय का चयन नहीं कर पाता था।

नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य सबको समान शिक्षा का अवसर प्रदान करना है। अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा छात्रों या विद्यार्थियों के द्वारा स्कूल छोड़ दिया गया है उन्हें फिर से शिक्षा की मुख्यधारा में जोड़कर शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रोत्सहित करना, अधिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कराना और साथ में पूर्ण कौशल विकास की व्यवसायिक शिक्षा भी देना है।

नई शिक्षा नीति की विशेषता इसमें प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दी जाएगी। इसके साथ ही इसमें कौशल विकास और व्यवसाय शिक्षा का भी प्रावधान किया गया है, जिससे कि विद्यार्थियों को अत्याधिक लाभ होगा। इसके साथ ही विद्यार्थियों को अपने विषय चुनने की आजादी होगी जिससे कि विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुरूप अध्ययन कर सकेगा तथा विद्यार्थी पर से मानसिक दबाव भी कम होगा।

नई शिक्षा नीति का क्रियान्वयन यदि सही से हुआ तो हमारे देश में भी अन्य देशों के समान अधिक उन्नत गुणवत्ता युक्त शिक्षा और शिक्षित समाज की स्थापना होगी जो हमारे देश के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देगा और हमें अपनी शिक्षा प्रणाली पर पूरा विश्वास है कि यह शिक्षा नीति सफल तरीके से कार्यान्वित होकर देश को एक नई बुलंदियों पर ले जाएगी।





एक कहानी इनसानियत की

आर. श्रीविद्या
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

एक दिन श्री कृष्ण और अर्जुन बातें करते हुए कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक वृद्ध आदमी भिक्षा माँग रहा था। अर्जुन को उसकी हालत देखकर दया आई और उसे एक थैली भर सोने के सिक्के दिए। वह आदमी बहुत खुश होकर अपने घर की ओर चल पड़ा। इतने में एक चोर ने उससे सोने के सिक्के वाली थैली चुरा लिया। वृद्ध आदमी दुःखी होकर, अपने भाग्य को कोसते हुए चल पड़ा। अगले दिन भी भिक्षा माँगते निकल पड़ा। रास्ते में उसकी मुलाकात भी से श्री कृष्ण और अर्जुन से हुई। अर्जुन ने उस वृद्ध आदमी से पूछा कि तुम फिर क्यों भिक्षा माँग रहे हो, तो उस वृद्ध व्यक्ति ने अपनी आपबीती सुनाई। अर्जुन को उसकी बातें सुनकर तरस आयी और इस बार उसने उस वृद्ध भिक्षुक को एक किमती हीरा दिया। हाथ में हीरा पाकर वह वृद्ध आदमी अत्यन्त प्रशंसन हुआ। इस बार, उसे छिपा के बड़े सावधानी से अपने घर ले गया और अपनी झोपड़ी में एक पूराने मटके के अन्दर रख दिया और इसकी सूचना अपनी पत्नी के भी नहीं दिया और नित्य की तरह निश्चिंत होकर खुशी-खुशी सो गया।

सुबह जब उसकी पत्नी नदी से पानी लेने चली तो पैर फिसलकर गिर पड़ी और उसका मटका फूट गया। घर से वह वही पूराना मटका लेकर पानी लेने चली गई। जैसे ही मटके को नदी में डुबोया, हीरा नदी में गिर गया और वह पानी लेकर वापस आ गई।

इतने में वृद्ध आदमी खुशी-खुशी हीरा की खोज में मटके तलाश रहा था तो पत्नी की बात सुनकर हीरा खोने से वह फिर अपने हतभाग्य को कोसने लगा और फिर से भिक्षा लेने निकल गया। इसबार भी फिर से उसकी मुलाकात श्री कृष्ण और अर्जुन से हुई। इस बार भी दोनों ने उस वृद्ध आदमी की बातें सुनी और अर्जुन सोचने लगे शायद इसके भाग्य में यही लिखा है, मैं फिर से इसकी मदद नहीं करूँगा। लेकिन इस बार श्री कृष्ण ने उसे दो पैसे दिए। अर्जुन ने यह देखकर श्री कृष्ण से पूछा – “मैंने तो उसे थैली भर सोने के सिक्के दिये, बहुमूल्य हीरा भी दीया, पर उसकी हालात नहीं बदल सका, आपके दो पैसे से उसका क्या होगा ?” श्री कृष्ण मुस्कुराते हुए कहे – “देखते हैं।”

वृद्ध आदमी दो पैसे लेकर चल पड़ा। सोचा कि इस दो पैसे से तो ज्यादा कुछ खरीद न पाउंगा। कुछ खाने-पीने का सामान लेते चलता हूँ। उसी समय नदी से मछली पकड़कर मछुवारा निकल रहा था। मछली अपने जीवन बचाने कि लिए व्याकुल तड़प रही थी। इतने में उस वृद्ध आदमी की नज़र उस मछली पर पड़ी तो उससे मछली की हालत देखकर दया आ गई। वृद्ध ने उससे वह मछली खरिद के उसे पानी में दुबारा छोड़ने का निश्चय किया। जैसे ही पानी में छोड़ने के लिए मछली को लिया उसने देखा मछली के गले में कुछ फंसा हुआ था और मछली ठीक से सांस नहीं ले पा रही थी। उसने हाथ से उसे निकाला तो देखा कि यह तो वही हीरा है जो अर्जुन ने उसे दिया था। वह खुशी से चिल्लाने लगा। इसी समय वहाँ से वही चोर गुजर रहा था जो उसके सोने के सिङ्कों से भरी थैली चुराया था। उस वृद्ध की चिल्लाने कि आवाज सुन के उसे लगा कि उस वृद्ध ने उसे पहचान लिया है। चोर डरता हुआ उसके पास आया और उस वृद्ध को वह थैली लेटा दिया और क्षमा मांग कर चला गया।

अर्जुन इन सारी घटनाओं को देखकर, श्री कृष्ण से पुछा कि जो उसकी थैली भर सोने के सिङ्के और वेश्किमती हीरा नहीं कर सका, वह श्री कृष्ण के दो पैसे ने किया, कैसे? श्री कृष्ण मुस्कुराते हुए बोले कि जब उसे तुम्हारा सोना और हीरा मिला तो उसने सिर्फ अपने बारे में सोचा पर जब उसे दो पैसे मिले तो उसने मछली के जीवन बचाने की सोच में आकर उसने दया किया तो ईश्वर को उसकी हालत पर दया आई और उसकी मदद की।

हे अर्जुन! जब तुम दूसरों की कठिन समय में मदद करते हो तो तुम मदद ही नहीं ईश्वर का भी काम कर रहे हो और ईश्वर भी तुम्हारा ख्याल रखते हैं।

दोस्तों....! हमें भी अपने जीवन में जितना हो सके उतना दूसरों की दर्द, परेशानियों में, मदद करना चाहिए।





फिल्म समीक्षा- शिंडलर्स् लिस्ट

लक्ष्मी नारायण प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

“जो एक जीवन बचाता है, वह पूरी दूनिया की रक्षा करता है।”-तालमुडिक लिपि में एक अंगूठी में उकेरी गई यह उक्ति द्वितीय विश्व युद्ध काल के दौरान नाज़ी व्यवसायी, ऑस्कर शिंडलर की कहानी को बखूबी बयां करती है।

शिंडलर्स् लिस्ट, (शिंडलर की सूची), 1993 में प्रथ्यात निर्देशक स्टीवेन स्पीलबर्ग के द्वारा निर्देशित एक ऐतिहासिक ड्रामा है। फिल्म एक नाज़ी जर्मन व्यवसायी के इर्द-गिर्द घूमती है जिसने हजारों पोलिश-यहूदियों को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान बचाया था।

कहानी के अनुसार द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी की नाज़ी सेना ने पोलैंड में बसे स्थानीय यहूदियों को जबरन गंदी एंव भीड़-भाड़ वाली बस्तियों में रहने को मजबूर कर दिया और उनके सारे अधिकार छीन लिए। ऑस्कर शिंडलर जो एक मुनाफाखोर व्यवसायी के साथ-साथ हिटलर की नाज़ी पार्टी का सदस्य भी था, उसे यह अफरा-तफरी एक नये फैक्टरी में हाथ आँज़माने की एक नया अवसर दिखता है। नाज़ी कानून के तहत अगर कोई यहूदी किसी जर्मन व्यवसाय या उद्योग में कार्यरत है वह कॉनसेंट्रेशन कैंप (Concentration Camp), जहाँ बड़ी संख्या में यहूदियों को मार दिया जाता था, में जाने से बच सकते थे। इसी कारण यहूदी शिंडलर को जोखिम भरे फैक्टरी में बिना मेहनताना लिए रात-दिन काम करने के लिए तत्पर थे। समय के साथ हालात और बदतर हो जाते हैं। जब नाज़ी लेफिटनेंट अमाँन गॉथ को प्लासज़ों कॉनसेंट्रेशन कैंप बनाने का जिम्मा मिलता है। निर्दय लेफिटनेंट यहूदियों पर बिना कारण गोलियों की बौछार कर देता है। कैंप का निर्माण होते ही उसने हजारों यहूदियों को बस्तियों से उठा कर कैंप में भेजने का निर्देश दिया जहाँ कैदियों को जहरीली गैस से मार देने का चलन था। यहूदियों के उत्पीड़न को देख कर शिंडलर के हृदय में परिवर्तन की झलक दिखने लगी, खासकर एक नन्ही यहूदी बच्ची जिसे उसे कुछ ही दिनों पहले चहकते देखा था, वह अचानक लाशों से भरे ठेले में मृत अवस्था में ले जाते दिखी। शिंडलर का ध्यान अब फैक्टरी से मुनाफा कमाने के बजाए यहूदियों के जान बचाने की ओर गया। उसने लेफिटनेंट गॉथ को भारी-भरकम रिश्वत देकर हजारों यहूदियों को एक नए फैक्टरी में काम में लगाने की योजना बनाई। यहूदी अधिकारी इट्जाहक स्टर्न की मदद से उसने घोर सोच विचार कर 850 यहूदियों की सूचि बनाई जो ब्रूनिट्ज में स्थापित नए फैक्टरी में काम करेंगे। उधर यहूदी महिलाओं एवं बच्चों से भरी ट्रेन गलती से कॉनसेंट्रेशन कैंप की ओर चली जाती है। भारी रिश्वत देकर शिंडलर उन महिलाओं एवं बच्चों का छुड़वाता है। जर्मनी युद्ध में हार को देख रखा था और अमेरिकी एवं रूसी सेना पोलैंड में दस्तक दे चुके थे। शिंडलर ने अपनी सारी जमा-पूँजी उस फैक्टरी में लगा दी जहाँ एक भी सामग्री नहीं बनी और अपने यहूदी कर्मचारियों को नाज़ी सेना के उत्पीड़न से बचाया। जल्द ही अमेरिकी सेना का कब्जा पोलैंड पर हो गया। सभी नाज़ी अधिकारी एवं सेना से जुड़े जवान गिरफ्त में लिए गए और कुछ को फॉसी दी गई। शिंडलर के सिर पर गिरफ्तारी की तलवार लटकने लगी। अतः उसने विरोद्धी सेना को आत्म समर्पण करने का निर्णय लिया। यहूदी कर्मचारियों ने अपने प्राण रक्षक मसीहा

शिंडलर को एक हस्ताक्षरित बयान दिया जिसमें यहूदियों को बचाने में उसकी भूमिका का प्रमाण था। भावनात्मक एवं मार्मिक वातावरण में यहूदियों की आँखों की आँसू लिए शिंडलर को विदा किया।

भोर की उजली किरणें यहूदियों के लिए आजादी का पैगाम लाते हैं। फिल्म के अंतिम दृश्य में शिंडलर के द्वारा बचाए गए यहूदी अपने परिवार के साथ उनके कब्रगाह पर श्रद्धांजली अर्पित करते दिखते हैं।

तीन घंटे पंद्रह मिनट के अंतराल में बनाई गई फिल्म इतिहास के उन पन्थों को खंगालती है जिसे आज की पीढ़ी लगभग भूल चुकी है। फिल्म के चित्रण ब्लैक एवं व्हाईट है। निर्देशक स्पीलबर्ग के अनुसार प्रताड़ित यहूदियों का जीवन नीरस और बेरंग था, उनकी पीड़ा का चित्रण रंगों में नहीं किया जाता। हालांकि नन्ही बच्ची जिसकी बाद में जर्मन सेना के हाथों मौत हो जाती है, उसे लाल रंग की पोशाक में दिखाया गया है। इसके पीछे स्पीलबर्ग यह संदेश पहुंचाना चाहते थे कि यूरोप में यहूदियों का नरसंहार उस चटकीले लाल रंग की तरह प्रत्यक्ष था पर अमेरीका ने सालों तक आंखे मूँद रखी थी। स्पीलबर्ग की अतुलनीय निर्देशन में हर वह बारिकीयों का ध्यान रखा गया जो एक ऐतिहासिक ड्रामा से अपेक्षा की जाती है। यहूदियों पर हिंसा और अत्याचार के कई दृश्य विचलित करने वाले हैं। वहीं कई ऐसे क्षण भी हैं जहाँ दर्शक अपने आंखों को नम होने से नहीं रोक पाते हैं। ऑस्कर शिंडलर का किरदार लीयम नीसन ने निभाया है और इस भुमिका में अपने अभिनय की कौशलता से जान फूंक दी है। वेन किंगस्ले से बरवबी इट्जाहक स्टर्न के किरदार को जीया। शिंडलर और स्टर्न के बीच मार्मिक संवाद एवं उनका अटूट संबंध दर्शकों को बांधे रखता है। इसके अलावा लेफ्टिनेंट गॉथ की भूमिका में रैल्फ फिनीज गहरी छांप छोड़ते हैं। फिल्म की सिनेमेटोग्राफी हर एक दृश्य को जीवित कर देती है। हर एक शार्ट को जीवित करने के लिए रोशनी और अंधेरे का बेजोड़ इस्तेमाल किया गया है। फिल्म की एक और खासियत हृदयविदारक संगीत है जिसे जॉन विलियम्स ने लिखा है। चाहे वह बच्चों द्वारा लोक गीत हो या वायलिन में पिरोया गया मुख्य थीम। रोंगटे खड़े कर देने वाला यह संगीत अब तक के सबसे भावात्मक रचनाओं में गिना जाता है। फिल्म की समीक्षकों ने सर-आंखों पर उतारा, वहीं अकादमी अवार्ड में फिल्म ने पुरस्कारों की झड़ी लगा दी। ऑस्कर में इसे बारह नामांकन मिले। जिसमें इसे सात अवार्ड बटोरने में कामयाबी मिली। फिल्म को सिनेमा जगत की सबसे महत्वपूर्ण एवं सर्वक्षेष्ठ ऐतिहासिक कृति में गिना जाता है।

प्रथम चित्रण के तीस साल बाद भी यह फिल्म उतनी ही प्रासंगिक है जितनी विश्व युद्ध काल के दौरान थी। फिल्म को केवल इतिहास खंगालने के लिए ही नहीं बल्कि इस आशा के संचारण के लिए भी देखा जाना चाहिए कि बढ़ती भय एवं निराशा के वातावरण में भी कुछ आत्माएँ नफरत की भावना से उठकर एक बेहतर एवं मानवीय जहाँ बनाने कि लिए आगे बढ़ेंगे।





जैविक कृषि : लाभकारी खेती की पहल

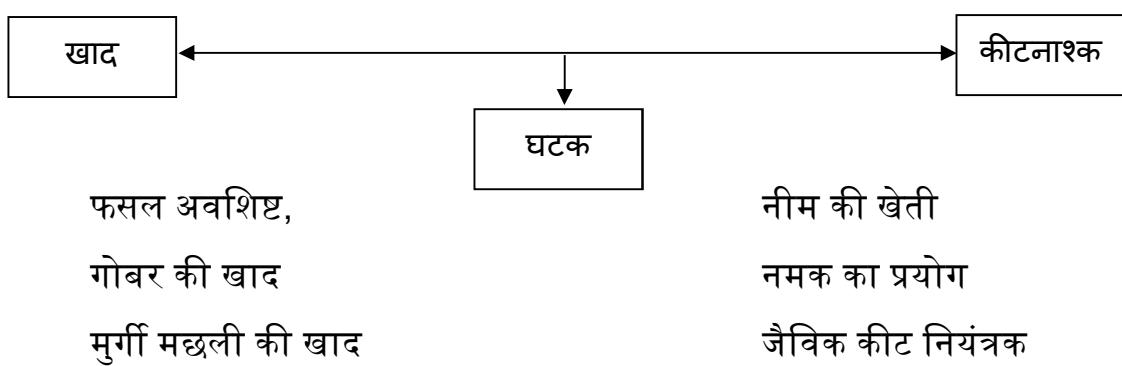
राम लखन मीना
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

कृषि क्षेत्रक पर बढ़ते जनदबाव, सीमित संसाधनों और न्यून्तम उत्पादकता के कारण वैज्ञानिक समुदाय का ध्यान हरित क्रांति जैसी व्यवस्था की ओर गया, किंतु इसके दुष्प्रभावों ने वैश्विक जगत का ध्यान उत्पादन के साधनों और तौर-तरीकों पर पुर्णविचार करने के लिए खीचा। इसका सम्यक समाधान जैविक घटकों के प्रयोग आधारित कृषि उत्पादन प्रणाली के रूप में सामने आया। दरअसल रसायनिक आधार वाली कृषि प्रणाली ने उत्पादन बनाम प्रदूषण अथवा उत्पादकता बनाम टिकाऊपन जैसी गंभीर बहसों को जन्म दिया था। इसके निवारण की आशा की किरण ही जैविक खेती के रूप में प्रस्फुटित हुई, यह लाभकारी, टिकाऊ व मित्र कृषि प्रणाली की पृष्ठभूमि है।

इसे प्रकृति के प्रति झुकाव वाली कृषि के रूप में जाना जाता है। यह ऐसी पद्धति है जो रसायनिक कीटनाशकों व उर्वरकों के स्थान पर मृदा संरक्षण और उपयोगिता बनाए रखने के लिए जैविक खाद, सीवेज, पेड़-पौधों के अवशिष्टों, जैव विविधता तथा संसाधन संरक्षण का प्रयोग किया जाता है।

रसायनिक आधार वाली खेती ने कृषि के मूल टांचे को ही नष्ट करना शुरू कर दिया जहाँ प्रारंभ में उत्पादन बढ़ा वही कुछ समय बाद उसमे ठहराव या गिरावट की प्रवृत्ति देखी गयी, यह जैविक खेती की ओर प्रस्थान बिंदु साबित हुआ।

भारत में प्राचीन काल से ही कृषि प्रणाली में जैविक घटकों का प्रयोग होता रहा है इस तथ्य को यहां की कृषि संरचना को देखकर भली-भांति समझा जा सकता है किंतु आधुनिक कार्बनिक खेती की शुरूआत युनाइटेड किंगडम से मानी जाती है जहाँ सर एलबर्ट होवार्ड को "आधुनिक कार्बनिक खेती का पिता" माना जाता है। दरअसल कार्बनिक किसान वे थे जिन्होंने मृदा पोषक तत्वों की आपूर्ति खेत अवशिष्ट तथा हरी खाद से किया और रसायनिक कीटनाशकों के स्थान पर जैविक कीटनाशकों का प्रयोग किया।



हरी खाद (डैंचा, सनई)

जैव अपघटक कचरा

नील हरित शैवाल

इत्यादि खादों का प्रयोग

केंचुआ, सांप इत्यादि
विविधता पूर्ण फसलों की
बुवाई की जाय जिससे
रोगों का प्रसार कम से कम हो ।

भारत के कार्बनिक खेती का आधार परंपरागत रूप से पहले से ही विद्यमान रहा है । यहाँ का किसान जैविक खेती की लगभग प्रविधियों का प्रयोग पूर्व में करने के कारण पर्याप्त अनुभवी रहा है । देश के विभिन्न भागों के किसानों ने इसका स्वागत भी किया है अतः भारत इसकी सर्वाधिक उपयुक्त जगह है ।

प्रभाव

- टिकाउ व पोषणीय कृषि को बढ़ावा मिलेगा
- संसाधन संरक्षण होगा
- परिस्थितिकी संतुलन में सहायक
- उत्पादन की मात्रा ही नहीं गुणवत्ता भी बढ़ेगी
- बाजार में हर्बल उत्पादों की पूर्ति होगी
- सुरक्षित खाद्य चक्र पूरा हो सकेगा
- जैविक उत्पादों की मांग किसानों का लाभ बढ़ाएगी जिससे उसकी आय बढ़ेगी
- लाभ की स्थिति कृषि उपकरणों की खरीद में भी तेजी लाएगी, द्वितीयक क्षेत्र मजबूत
- टिकाउ, हरित, संपोषणीय व सतत विकास मॉडल को मजबूती मिलेगी
- जैविक आधार जैव विविधता को बढ़ावा देगी

मजबूत पक्ष

- जैविक संसाधनों की प्रचुर उपलब्धता
- अंतर्राष्ट्रीय बाजार की मांग
- रसायनिक खेती में अरुचि
- देशी जैविक संसाधनों की प्रचुरता
- किसानों की अनुभवशीलता
- सरकार का सौहाद्रपूर्ण रवैया

कमजोर पक्ष

- जागरूकता व प्रशिक्षण का अभाव
- जोतों का विघटित व छोटा आकार
- पूर्व की रसायनिक खेती ने जैव आधार को नष्ट कर दिया है अतः उसकी पुर्णस्थापना करनी पड़ेगी ।

- पहले तीन वर्ष कार्बनिक खेती लाभ नहीं दे पाती इसमें ब्रेक ईवन बिंदु के आने के बाद ही क्रमिक रूप से ही लाभ की स्थिति बनेगी। ऐसी दशा में शुरूआत के तीन वर्ष किसानों को संरक्षण देना व उनके घाटे की भरपायी सबसे बड़ी चुनौती उभरी है।

भारत सरकार ने जैविक कृषि को बढ़ावा देने हेतु राष्ट्रीय कार्ययोजना तैयार की है सिक्किम कार्बनिक खेती की शुरूआत करने वाला भारत का पहला राज्य है।

राजस्थान के कृषि विज्ञान केंद्र ने श्री गंगानगर जिले के एक मात्र गांव को गोद लिया है जिससे प्रत्येक कृषक अपनी जमीन के एक भाग में अनिवार्य रूप से कार्बनिक खेती को बढ़ावा देगा।

आज जिस तरह से उपभोक्तावादी संस्कृति ने खान-पान जीवनशैली को नकारात्मक ढंग से परिवर्तित किया है उसमें स्वास्थ्य व पर्यावरण के साथ सुरक्षित खाद्य उपलब्धता पर भी प्रश्न खड़ा किया है। सरकार का ध्येय है कि यदि विकास की निरंतरता बनायी रखनी है तो अब कार्बनिक खाद्य से स्वस्थ्य पर्यावरण की अवधारणा को केंद्र के समक्ष रखना होगा, जैविक खेती की यहीं दिशा है।

आज रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के बढ़ते उपयोग से उत्पन्न स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय समस्याओं तथा विषैले उत्पादों का समाधान जैविक खेती के रूप में ढूँढा जा रहा है। पर्यावरण मित्र विकास मॉडल की दृष्टि से जैविक खेती प्राथमिक क्षेत्र की रीढ़ साबित हो सकती है जो उसे टिकाऊ व लाभकारी कृषि ढांचे में परिवर्तित कर देगी। यह न केवल पोषणीय विकास की दृष्टि से आवश्यक होगा बल्कि प्रदूषण नियंत्रण, पर्यावरण संरक्षण तथा स्वास्थ्य जीवन-शैली की दृष्टि से बेहद उपयोगी होगा, इसलिए माननीय प्रधानमंत्री ने गंगटोक से देश के किसानों का आह्वान किया है।





पिता का समाज व पुत्रों के नाम पत्र

रवि कुमार - II
लेखापरीक्षक

लखनऊ के एक उच्चवर्गीय बूढ़े पिता ने अपने पुत्रों के नाम एक चिट्ठी लिखकर खुद को गोली मार ली। चिट्ठी क्यों लिखी और क्या लिखा। यह जानने से पहले संक्षेप में चिट्ठी लिखने की पृष्ठभूमि जान लेना जरूरी है।

पिता सेना में कर्नल के पद से रिटार्ड हुए। वे लखनऊ के एक पाँश कॉलोनी में अपनी पत्नी के साथ रहते थे। उनके दो बेटे थे। जो सुदूर अमेरिका में रहते थे। यहां यह बताने की जरूरत नहीं है कि माता-पिता ने अपने लाडलों को पालने में कोई कोर कसर नहीं रखी। बच्चे सफलता की सीढ़िया चढ़ते गए। पढ़-लिखकर इतने योग्य हो गए कि दुनिया की सबसे नामी-गिरामी कार्पोरेट कंपनी में उनको नौकरी मिल गई। संयोग से दोनों भाई एक ही देश में, लेकिन अलग-अलग अपने परिवार के साथ रहते थे।

एक दिन अचानक पिता ने रुआँसे गले से बेटों को खबर दी। बेटे! तुम्हारी मां अब इस दुनिया में नहीं रही। पिता अपनी पत्नी की मिट्टी के साथ बेटों के आने का इंतजार करते रहे। एक दिन बाद छोटा बेटा आया, जिसका घर का नाम चिंटू था।

पिता ने पूछा चिंटू! मुन्ना क्यों नहीं आया। मुन्ना यानी बड़ा बेटा। पिता ने कहा कि उसे फोन मिला, पहली उडान से आये।

धर्मनुसार बडे बेटे का आना सोच वृद्ध फौजी ने जिद सी पकड़ ली।

छोटे बेटे के मुंह से एक सच निकल पड़ा। उसने पिता से कहा कि मुन्ना भईया ने कहा कि, "मां की मौत में तुम चले जाओ। पिता जी मरेंगे, तो मैं चला जाऊंगा।"

कर्नल साहब (पिता) कमरे के अंदर गए। खुद को कई बार संभाला फिर उन्होंने चंद पंक्तियों का एक पत्र लिखा। जो इस प्रकार था-

प्रिय बेटों

मैंने और तुम्हारी मां ने बहुत सारे अरमानों के साथ तुम लोगों को पाला-पोसा। दुनिया के सारे सुख दिए। देश-दुनिया के बेहतरीन जगहों पर शिक्षा दी। जब तुम्हारी मां अंतिम सांस

ले रही थी, तो मैं उसके पास था। वह मरते समय तुम दोनों का चेहरा एक बार देखना चाहती थी और तुम दोनों को बाहों में भर कर चूमना चाहती थी। तुम लोग उसके लिए वही मासूम मुम्बा और चिंटू थे। उसकी मौत के बात उसकी लाश के पास तुम लोगों का इंतजार करने लिए मैं था। मेरा मन कर रहा था कि काश तुम लोग मुझे ढांडस बधाने के लिए मेरे पास होते। मेरी मौत के बाद मेरी लाश के पास तुम लोगों का इंतजार करने के लिए कोई नहीं होगा। सबसे बड़ी बात यह कि मैं नहीं चाहता कि मेरी लाश निपटाने के लिए तुम्हारे बड़े भाई को आना पड़े। इसलिए सबसे अच्छा यह है कि अपनी मां के साथ मुझे भी निपटाकर ही जाओ। मुझे जीने का कोई हक नहीं क्योंकि जिस समाज ने मुझे जीवन भर धन के साथ सम्मान भी दिया, मैंने समाज को असभ्य नागरिक दिये। हाँ अच्छा रहा कि हम अमरीका जाकर नहीं बसे, सच्चाई दब जाती।

मेरी अंतिम इच्छा है कि मेरे मेडल तथा फोटो बटालियन को लौटाए जाए तथा घर का पैसा नौकरों में बाटा जाए। जमापूँजी आधी वृद्ध सेवा केन्द्र में तथा आधी सैनिक कल्याण में दी जाए।

- तुम्हारा पिता

कमरे से ठांय की आवाज आई। कर्नल साहब ने खुद को गोली मार ली।

यह क्यों हुआ, किस कारण हुआ? कोई दोषी है या नहीं। मुझे इसके बारे में कुछ नहीं कहना।





माँ का आँचल

आशा रामकृष्णन
सहायक पर्यवेक्षक

जिनके पास माँ और उनका आशिर्वाद हो तो मेरे ख्याल से वे सबसे ज्यादा धनवान हैं। माँ की ममता का कोई अंत नहीं है, वह अपने हर सांस में हमेशा सभी का भला ही चाहती है। माँ का आँचल जीवन की सबसे किमती वस्तु है कठिन से कठिन परिस्थिति में अगर हमारे साथ हमारे भाग्य अच्छे हो और माँ का हाथ हो हमारे सिर पर तो हम हर डगर पार कर जाते हैं।

चाहे हम कितने भी बड़े हो माँ के सामने हम सभी उनके छोटे बच्चे ही हैं, जब कभी हम अपने मायके जाते हैं तो घर में प्रवेश करते ही हमारी आँखें प्यार के लिए तरस्ती हैं। माँ अपने काम में उलझी हुई है हमेशा की तरह, जोर से जाकर माँ से लिपट जाते हैं और उनके आँचल में अपना माथा ढक लेते हैं, बस ! मानो सब कुछ मिल गया जो मैंने खोया था और मीठी सांस लेते हैं।





आओं बातें चाँद की करते हैं।

अखिलेश
लेखापरीक्षक

मस्त गगन में, अपनी धुन में
सीना ताने चलते हैं।
आओं बातें चाँद की करते हैं।

रात के अंधियारे में
चाँद सा जलते हैं,
रात के इस तम को
तकिये में भरते हैं।
आओं बातें चाँद की करते हैं।

फैला पंख अपने
कोसों मील तरते हैं
पखों में अपनी हम
नई उम्मीदें भरते हैं।
आओं बातें चाँद की करते हैं।

सब अपना गम तो दुनिया में
देखा ही करते हैं
चलों चाँद जैसे हम भी
दुःख गैरों के हरते हैं।
आओं बातें चाँद की करते हैं।

तारों की इस भीड़ में
मध्य बिंदु में सनते हैं,
जब जब उम्मीदें सूरज ढलें
चलो चाँद सा उभरते हैं।
आओं बातें चाँद की करते हैं।

जीवन के नए पड़ाव पे,
नए मुकां मिलते हैं,
देखो जो गौर से तो
हर दिन नई परतें हैं।
आओं बातें चाँद की करते हैं।



मोल नहीं है तोल नहीं
चाँद का इस जग में,
अंधियारे में बैठा,
बाँट रहा है सपने,
आआ हम भी उस जैसा
बनने की कोशिश करते हैं।
आओं बातें चाँद की करते हैं।



सेलुलर वर्ल्ड

आर. श्रीविद्या
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आजकल के जमाने में, हर कोई इंटरनेट, फेसबुक, ट्रिवटूर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, वॉट्सूएप इत्यादि के जरिए हाथ में रखे मोबाइल फोन के माध्यम से सेलुलर वर्ल्ड में भ्रमण करता है। मानो सारी दुनिया हाथ में सिमटकर रखा हो। इसका प्रभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। बैठे-बैठे नेट-बैंकिंग करना, ऑनलाइन शॉपिंग करना, ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेना, वर्चुअल मिटिंग में हिस्सा लेना, बिजनेस संबंधित काम करना, इसका उपयोग हर दिन विकसित होता जा रहा है। हर क्षेत्र में इसका प्रभाव बढ़ता जा रहा है चाहे कम्युनिकेशन, मेडिकल एजुकेशन, नेविगेशन इत्यादि।

मोबाइल का प्रभाव हर दिन तेजी से बढ़ता ही चला जा रहा है। एप्स यानि एप्लिकेशन इतने हैं कि क्या कहना। लगभग सभी के लिए जैसे रसोई, पढ़ाई, विडिओ, आडियो, खेल-कूद, चित्रकारी, शिल्प, सुंदरता, गेम्स। हर उम्र के लिए अनेकों एप्स हैं। तरह-तरह की सुविधाएं प्रदान करती है। मन पसंद फ़िल्म देख सकते हैं, गीत भी सुन सकते हैं। घर बैठे दुनिया की सैर कर सकते हैं। खाना भी मन चाहे होटल से मंगवा सकते हैं। वाट्सअप गूप बनाकर मन पसंद विषय शेयर भी कर सकते हैं। आजकल हर फैमली में भी अलग-अलग गूप रखता है। बड़े अपने - छोटे अलग से अपने। इसकी कोई सीमा नहीं है। ऑफिस गूप, फ्रेण्ड्स गूप, कहीं गाँव का, कहीं मुहल्ले का। विषय जल्दी से दूसरे तक पहुँच जाता है – अच्छे भी और बूरे भी।

आजकल सोशल मीडिया, इतनी शक्तिशाली हो गयी है कि इसपर ध्यान देना अनिवार्य बन चुका है। अमीर, गरीब, बुजुर्ग, नौजवान, बच्चे, सभी को मोहित कर रखा है। सेल्फी का मोह इतना हो गया है कि कभी अपना जान भी गँवा देते हैं। इमेल के अगमन से पेपर पर लिखना ही कम हो गया है। पत्र, संदेश कुछ ही क्षण में दूसरे तक पहुँच जाता है।

मोबाइल फोन तो कैलकुलेटर, कैलेण्डर, कैमरा, टाईप राइटर, कम्प्युटर इत्यादि को एक छोटे से डिवाइस में समा रखा है। गाने सुनने के लिए रेडियो भी, पिक्चर देखने के लिए वीडियो भी, जब चाहे किसी से बात कर सकते हैं, लाइव भी देख सकते हैं। चाहे किसी भी देश में चाहे कितनी भी दूरी में हो। अकेलापन दूर हो रहा है, लेकिन लोग अकेले हो रहे हैं। दूरियां नजदीकियाँ में बदल रही हैं और नजदीक के लोग दूर भी हो रहे हैं। सेप फोन, एक वरदान भी है और अभिशाप भी। सेलुलर तकनिकि को सदा सदुउपयोग करने से हमारे शरीर, स्वभाव ध्यान, स्वास्थ्य, परिवार, मित्रों को खुशी प्रदान कर सकता है, उनका ख्याल भी रख सकते हैं। दुरपयोग से तो हमारा स्वास्थ पर बूरा असर पड़ता है। समय बर्बाद होती है, गैर-संचारी बना देती है, गोपनीयता की हानि होती है, दुर्घटना की संभवाना भी होती है। साइबर क्राइम का भी खतरा है। सेलुलार वर्ल्ड में सुरक्षित सैर करें – है ना !

\$\$\$\$\$



आजादी का “अमृत महोत्सव”

हर्ष कुमार
लेखापरीक्षक

भारत विविधताओं का देश है। इसे भारत, हिंदुस्तान और आर्यवर्त के नाम से भी जानते हैं। भारत एक ऐसा देश है जहां के लोग अलग-अलग भाषा बोलते हैं और विभिन्न जाति धर्म, संप्रदाय और संस्कृति के लोग एक साथ रहते हैं। इसी बजह से भारत को विविधता में एकता का देश कहा जाता है। भारत का इतिहास अति प्राचीन, अति विशाल और अति संमृद्ध है। यहीं पर सभ्यता का जन्म हुआ है। यह ज्ञान- विज्ञान, समृद्धि, कलाकारी, शौर्य और अध्यात्म से परिपूर्ण है। भारत को अंग्रेजों की जंजीरों से 15 अगस्त 1947 को आजादी मिली। जिसके 75 वर्ष पूरा होने के स्मरण के रूप में स्वतंत्रा की 75वीं वर्षगाँठ पर शुरू किया गया आजादी का अमृत, महोत्सव स्वालंबन की दिशा में उठाया गया एक और मील का पत्थर है।

15 अगस्त, 2022 को देश की आजादी के 75वां वर्षगाँठ मनाया गया। इस आजादी के 75वें वर्षगाँठ मनाने के लिए 75 सप्ताह पहले आजादी का अमृत महोत्सव का आगाज हुआ। प्रधानमंत्री जी ने 12 मार्च, 2021 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में इस महोत्सव का उद्घाटन किया था। यह महोत्सव 12 मार्च, 2021 से 15 अगस्त, 2023 तक चलेगा। 12 मार्च, 2021 को प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा इस महोत्सव की शुरूआत करने के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण था, क्योंकि इसी दिन राष्ट्रपिता ‘महात्मा गाँधी’ और उनके साथियों के द्वारा अंग्रेजों के विरोध में नमक सत्याग्रह की नींव डाली गयी थी। महात्मा गाँधी जी ने 24 मार्च 1930 को दांडी में समुद्र के किनारे नमक बनाकर अंग्रेजों के काले कानून को तोड़ा था। यह यात्रा 24 दिन चली थी जिसमें 80 लोग शामिल थे। किन्तु 390 कि.मी. तक चली इस पद यात्रा में हजारों लोग बाद में जुड़ गए थे।

आज भारत निरंतर नई-नई उपलब्धियों को प्राप्त कर रहा है। किन्तु जिन वीर सपूतों के कारण हमें आजादी मिली है उन भारत के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों और उपलब्धियों के बारे में आम जन मानस को जागरूक करना इस महोत्सव का मुख्य उद्देश्य है। आज हर भारतवासी इन वीर सपूतों के संघर्षों की ऋणी है।

आजादी का अमृत महोत्सव सभी सरकारी संस्थान में धूमधाम से मनाया जा रहा है। कुछ जगहों पर रैलियों का भी आयोजन किया गया है, जिससे इस महोत्सव का महत्व लोगों तक पहुँच सके। देश के प्रत्येक सरकारी भवन पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाना है। स्कूल के बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हैं और अपने कला के माध्यम से इस महोत्सव को मनाते हैं। बच्चों को विद्यालयों में आजादी को प्राप्त करने में वीरों के संघर्षों की कहानियाँ बनाई जा रही हैं। 15 अगस्त 2021 से इस महोत्सव की शुरुआत हो चुकी है जिसमें देश के संगीत, नृत्य, प्रवचन, और प्रस्तावना पठन को शामिल किया गया है। इस महोत्सव में देश की संस्कृति को प्रदर्शित करने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए हैं।

इस महोत्सव में ही 'हर घर तिरंगा' कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस महोत्सव में चरखे से लोकल फॉर भोकल को बढ़ावा दिया गया। इसके लिए साबरमती आश्रम में एक चरखा रखा गया है जब कोई व्यक्ति लोकल व्यवसायी और उद्योग का सामान खरीदेगा और उसकी तस्वीर सोशल मीडिया पर वोकल फॉर लोकल का टैग लगाकर डालेगा तो उसके तुरंत बाद वह चरखा घूमेगा !!!

आज भारत एक है, अखंड है और बहुत तीव्र गति से हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। अंग्रेज भारत से जाते समय यह संबोधित कर गए थे कि उनके जाने के बाद हमारा भारत बिखर जाएगा किन्तु उन्होने सपने में भी कभी सोचा न होगा कि हमारा भारत सबसे विशाल लोकतंत्र के रूप में निखर जाएगा। आजादी के बाद भारत को भूखमरी, महँगाई, गरीबी, भ्रष्टाचार, अपराध जैसी कई कठिनाईओं का सामना करना पड़ा। लेकिन भारत ने इन सब कठिनाइयों से बाहर निकलते हुए न केवल कई उपलब्धियाँ प्राप्त की बल्कि आत्मनिर्भर भारत एवं सशक्त भारत के गगनचुंबी हौसलों के रास्तों पर अग्रसर है।





कौआ क्या जाने मोती का मोल

लक्ष्मी नारायण प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

“पापा, मेरे लिए वो केक जरूर ले आना, वो बारबी डॉल वाली”- बेटी जिया के ये शब्द गबरू के कान में बार बार गूँज रहे थे। रास्ते में बेकरी की वह दुकान आ गई जिसकी बारबी डॉल वाला केक देख जिया हठ कर चुकी थी कि अगले जन्मदिन में वह, यही केक काटेगी वरना वह स्कूल नहीं जाएगी। साइकिल एक किनारे रख, गबरू ने दुकानदार से केक का दाम पूछा, जवाब सुनकर उसके पसीने छुट गए... छः सौ रुपये का केक....! पिछले महीने जिया की स्कूल फीस पैसे की कमी के कारण वह नहीं भर पाया। ऊपर से जिया की माँ की लाईलाज बिमारी ने सारी बच्ची-कुची पूँजी गट कर गई। भरे मन से साईकिल उठा गबरू दफ्तर की ओर रवाना हो गया। “साब!, इस माह की तनख्वाह मिल सकती है?” दबे आवाज में उसने दफ्तर के कैंटीन मैनेजर से पूछा। महीने के दस तारीख भी नहीं हुई और आ गया मुंह उठाकर एडवांस लेने। पिछले महीने भी पंद्रह दिन नहीं आया था, जा भाग यहां से और काम कर, गुर्ती आवाज में मैनेजर ने गबरू की आखरी उम्मीदों पर भी विराम लगा दिया। कोने में पड़े पोछे को लिए उदास मन से यह कैंटीन की टेबलें पोछने लगा। आज उसका जन्मदिन है, क्या बोलूँगा कैसे समझाउंगा- मन ही मन गबरू बड़बड़ा रहा ही था कि कॉलेज के कुछ छात्र शोर करते हुए तेजी से कैंटीन में घुसे और वहां पड़ी एक टेबल के चारों ओर इकट्ठा हो गए। गबरू वापस अपने काम पर लगा ही था उसका ध्यान हैपी बर्थ डे टू यू की स्वर की ओर आकर्षित हुआ, मुड़ कर देखा तो एक लड़की हुबहू उसी बारबी डॉल वाले केक को मुस्कुराते हुए काट रही थी। जैसे ही उसने केक पर छुरी चलाई एक छात्र ने केक का बड़ा हिस्सा अपनी हाथों से उठाया और उस छात्रा ने केक का दूसरा हिस्सा उठाया और छात्र और छात्रा ने एक दूसरे के मुंह पर पोत दिया। इसके बाद केक का सारा हिस्सा हवा में उड़ता नज़र आया। किसी के चेहरे तो किसी के कपड़े केक की क्रीम से सने थे। शोर मचाते हुए छात्रों का समूह तेजी से कैंटीन से चलते बना। वातावरण तो शांत हो गया पर अफरा तफरी का वह नजारा देख गबरू असमंजस में पड़ गया। चारों ओर रंगीन पेपर के टुकड़े और केक बिखरा पड़ा था। पोछा लिए वह उस टेबल पर पहुँचा जहाँ केक काटा गया था। सामने पहुँच कर देखा तो केक का शायद ही कुछ अंश बचा था। बस केक में लगाई गई गुड़िया का सर क्रीम में सना हुआ टेबल पर पड़ा हुआ था। पापा मेरे लिए वो केक जरूर लाना बारबी डॉल वाला फिर से बिट्या की आवाज उसके कानों में गुंजने लगी। आँखों में आंसु झलक उठी। भरी आँखों से उसने पोछा उठाया और टेबल पर पड़ा केक साफ करने लगा।





अध्ययन का आनन्द

आशा रामकृष्णन
सहायक पर्यवेक्षक

इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति आनन्द प्राप्त करना चाहता है। अपने सभी प्रयासों और चेष्टाओं द्वारा दिन-रात परिश्रम करने के पीछे उसका एक ही लक्ष्य और उद्देश्य होता है। निर्धन ही आनन्द प्राप्त कर लेते हैं जबकि धनी और उद्योगपति समस्त विलासिता के आनन्द जुटा कर, प्राप्त करना चाहता है। आधुनिक युग में मनोरंजन के सभी साधनों द्वारा मानव आनन्द ही प्राप्त करना चाहता है। कहने का अभिप्राय यह है कि धनी हो या निर्धन, स्त्री हो या पुरुष, सन्यासी हो या गृहस्थ सभी इस संसार में आनन्द करना चाहते हैं।

आनन्द प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण साधन पुस्तकों का अध्ययन है। पुस्तकें मानव के सच्चे और स्थायी मित्र होते हैं। पुस्तकों को जिस मनुष्य ने अपना मित्र बना लिया और स्वाध्याय में अपना मन लगा दिला वह कभी अपने को अकेला और निराश अनुभव नहीं करता। पुस्तकें उसके ज्ञान में वृद्धि करती हैं, प्रेरणा और प्रोत्साहन देती हैं। पुस्तक वह ज्ञानरूपी मिठाई है जिसे जितना चाहे चकते जाओ वह कभी खत्म नहीं होती।

पुस्तकें मनुष्य को अमूल्य शिक्षा प्रदान करती हैं ये मानव को जीने की कला सिखाती है। मनुष्य अपनी रूचि और प्रवृत्ति के अनुसार साहित्य, विज्ञान, दर्शन, अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, गणित, राजनीति आदि किसी विषय का ज्ञान उस विषय की पुस्तक पढ़कर प्राप्त कर सकता है। पुस्तकें ज्ञान का सागर हैं। विद्वान लोग इसमें जितना गहरा उतरते हैं उतना ही उनके मन और मस्तिष्क का विकास होता है। मानव का विकास उसके शरीर से नहीं उसके मन और मस्तिष्क से होता है।

साधारण बुद्धि के पाठकों के लिए पुस्तकें मनोरंजन का साधन होती हैं। दिन भर काम करने के बाद कोई अच्छी कहानी, कविता या उपन्यास पढ़ कर कई लोगों की दिन भर की थकान दूर होने के साथ-साथ उसका मनोरंजन भी होता है। पुस्तकों के अध्ययन से मनुष्य को जिस आनन्द की प्राप्ति होती है उसके सामने अपार धन सम्पदा भी तुच्छ है। नेहरू, गांधी आदि भारतीय नेताओं ने अंग्रेजों के कारावास में भी अध्ययन के द्वारा ही सुख की प्राप्ति की थी। उन्होंने कारावास के दिनों में लिख कर अमूल्य पुस्तकों की निधि हमें प्रदान की है।

हस प्रकार हम कह सकते हैं, पुस्तकें हमारे आनन्द प्राप्ति का सर्वोत्तम और सात्त्विक साधन है। मनुष्य को अपनी रूचि के अनुसार किसी-न-किसी विषय का अध्ययन करके उस विषय में पारंगत होना चाहिए।





ईश्वर के दूत

आर. श्रीविद्या
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

दुनिया में मनुष्य सबसे उत्तम और सर्वश्रेष्ठ प्रजाति है। हमारा यह दायित्व है कि हम सभी के प्रति मानवता निभाए। निस्वार्थ भाव से सेवा करना मानवता की उच्च कोटि है। मुसीबत के समय में किसी को सहायता प्रदान करने से हम ईश्वर की दूत बन जाते हैं। अक्सर, कहा जाता है कि किसी ने समय पर मदद की तो वह ईश्वर का दूत बनकर आया है। कोई कार्य दूसरों की रक्षा या अत्यंत आवश्यक काम करे तो, वह ईश्वर के दूत के रूप में माना जाता है। हमारे जीवन में भी, किसी न किसी मोड़ पर कोई न कोई ईश्वर का दूत बनकर हमारी सहायता की होगी या हम भी किसी को समय पर सेवा करने से, हमें ईश्वर के दूत कहा गया होगा।

अस्पताल में जब कोई डॉक्टर जीवन बचाता है तो ईश्वर के दूत माना जाता है। भुखे प्यासे व्यक्ति को खाना-पानी देकर, उसके लिए हम ईश्वर का दूत बन सकते हैं। किसी को मुश्किल की घड़ी में साथ देकर या परिस्थिति के शिकार व्यक्ति को समय पर मदद करके, मानव ईश्वर का दूत बन जाता है। छोटे या बड़े, समय पर सेवा करना, चाहे जो भी इंसान प्राणी, वस्तुएँ भी, ईश्वर के दूत हो जाते हैं। जैसे डूबते आदमी को तिनके का सहारा। मानवता, मनुष्य समाज के उच्च आदर्श और नैतिक मूल्य है। मानवता मानव का गुण धर्म है जिसके मूल तत्व सत्य, अहिंसा, प्रेस, करुणा, दया त्याग, शुद्धता, नैतिकता, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा आदि है। दोस्तों मानवता का महत्व इस पूरे ब्रह्माङ्ग में बहुत ही बड़ा है और मानवता को इस दूनिया भर में सबसे उच्च श्रेणी का सम्मान मिलता है।

मानवता सभी के दिलों में है, परंतु उसे जागरूक करना और लोगों के प्रति संवेदनशील रहना, हमारी जिम्मेदारी होती है। प्रत्येक मानव के लिए जीवन में मानवता का रक्षण और पालन आवश्यक है।

मानव ईश्वर की सबसे सर्वोत्तम रचना है। सहयोग, सदाचार सद्भावना, प्यार, दया मानव की सर्वश्रेष्ठ और महान बनाती है। आजकल के युग में मानवता कम होती जा रही है क्योंकि मानव में लोभ, लालच, स्वार्थ आदि गुण बढ़ रहे हैं।

मानवता की सेवा, ईश्वर की सेवा है। मानवता से ही हम ईश्वर के दूत बनते हैं।

\$\$\$\$\$



भारत में लड़कियों के लिए पहला स्कूल

अखिलेश
लेखापरीक्षक

01 जनवरी 1848 को देश में लड़कियों की आधुनिक शिक्षा का पहला कदम उठा। उस दिन पुणे के भिडेवाडा में भारत का पहला सिर्फ लड़कियों का स्कूल शुरू किया गया। यह स्कूल समाज सुधारक ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले के व्यक्तिगत प्रयासों का नतीजा था। शुरूआत में स्कूल में सिर्फ 7-8 लड़कियां थीं। सावित्रीबाई भारत की पहली शिक्षिका बनी थीं, जिन्हें स्वयं ज्योतिबा ने ही पढ़ाया एवं शिक्षित किया था। आगे चलकर फातिमा शेख ने भी महिला शिक्षा में अपना योगदान दिया और सावित्रीबाई के साथ स्कूल में लड़कियों को पढ़ाना शुरू किया।

लेकिन उस दौरान भारत के रुढ़ीवादी और पितृस्तात्मक सोच वाले समाज में लड़कियों के लिए स्कूल खोलना एक क्रांति के समान था। इसलिए अनेकों बार इन्हें समाज के विरोध का सामना करना पड़ा। कई बार इन्हें हिसांत्मक एवं आलोचनात्मक व्यवहार का सामना भी करना पड़ा। लेकिन इन्होंने हार नहीं मानी और समाज में महिला उत्थान में एक अहम भूमिका निभाई। इन महान शिक्षिकाओं के कारण ही आज भारत देश में महिलाएं हर नई उचाई पर पहुँच रही हैं। जिसका एक नवीनतम उदारहण हमारी नई राष्ट्रपति है।

आगे चलकर ज्योतिबा एवं सावित्री ने वर्ष 1875 में “सत्यशोधक समाज” की स्थापना की। इसके उद्देश्य थे – समाज सेवा, महिला एवं निचली जाति के लोगों के बीच शिक्षा का शक्तिशाली आंदोलन शुरू करना। इसी दौर में इश्वर चंद्र विद्यासागर भी लड़कियों की शिक्षा के लिए काम कर रहे थे। आगे चलकर ज्योतिबा ने बालिकाओं के लिए तीन स्कूल और खोले। ज्योतिबा को आगे चलकर महात्मा ज्योतिबा के नाम से जाना जाने लगा। महात्मा ज्योतिबा व उनके संगठन के संघर्ष से सरकार ने ‘एग्रीकल्चर एक्ट’ पास किया। 1883 ई. में ब्रिटिश सरकार द्वारा स्त्रीयों की शिक्षा के महान कार्य के लिए स्त्री-शिक्षण की उपाधि से सम्मानित किया। ज्योतिबा ने गुलामगिस, तृतीय रक्त एवं छत्रपति शिवाजी जैसी प्रमुख पुस्तकें लिखीं।

भारत में महिला उत्थान एवं महिला शिक्षा प्रसार के लिए महात्मा ज्योतिबा फूले एवं शिक्षिका सावित्रीबाई फूले के अथक प्रयासों के लिए सदैव याद रखा जायेगा।





येलागिरी की मनोरम यात्रा

हर्ष कुमार
लेखापरीक्षक

यात्रा जीवन का आयाम होती है, जो मनुष्य के व्यक्तित्व को निखारने में मदद करती है। नई-नई चीजों का अनुभव कराती है। नए लोग, नई जगह एवं नई संस्कृति से रूबरू कराती है। यात्रा हमें हर बार एक नई अनुभूति प्रदान करती है।

हम सभी अपने जीवन में कई सारी यात्राएं करते हैं जिनमें से कुछ अविस्मरणीय होती है। मैंने भी अपने जीवन में अभी तक कई नई जगहों की यात्रा की है। उन्ही में से एक यह मेरी पहाड़ी क्षेत्र में बसी “येलागिरी की मनोरम यात्रा” है, जो तमिलनाडु के तिरुपुत्तूर जिला में स्थित है।

इस यात्रा का प्रबंध हमारे कार्यालय “कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तमिलनाडु” के द्वारा किया गया था। यह यात्रा दो दिनों की थी, जो 27 अगस्त 2022 से 28 अगस्त 2022 तक चली। इस यात्रा की शुरुआत 27 अगस्त को प्रातः छः बजे हमारे कार्यालय प्रांगण से हुई। जिसमें कार्यालय के अधिकांश कर्मचारियों एवं अधिकारी गण ने शामिल हुए। इस यात्रा की अनुसूची पहले से ही तैयार की जा चुकी थी और उसी के अनुरूप सभी कार्य बड़ी ही सरलता से निर्धारित समय पर पूर्ण किये जा रहे थे।

जैसे ही बस अपने गंतव्य स्थल की ओर बढ़ी, बसों में बैठे हुए सभी लोग अति प्रसन्न हुए। अक्सर बड़े शहरों में लोग अपने प्रतिदिन कार्य के भागम-भाग में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि अपने लिए सुकून का दो पल भी नहीं निकाल पाते और इस बीच इस यात्रा का होना किसी दैव अवसर से कम न था मानो हमारे बीच एक नई ऊर्जा की संचार होने लगी हो। यात्रा का आरंभ नृत्य एवं गान से हुआ, जिसके कारण लोगों के बीच की दूरियाँ एवं हिचकिचाहट जो सामान्य कार्यालय परिसर में होता है, वो थोड़ा कम हो गया। लोग खुलकर एक-दूसरे से वार्तालाप करने लगे। इस मनोरंजन के बीच कैसे दो घण्टे बीत गए पता भी नहीं चला और बस एक होटल के समीप जा रुकी। यहाँ पहले से ही नाश्ता का बहुत अच्छा प्रबंध किया गया था। चाय-नाश्ता का कार्यक्रम समाप्त होते ही बस फिर से अपने गंतव्य स्थल की ओर बढ़ चली और हमलोग फिर से वार्तालाप एवं मनोरंजन में लिप्त हो गए। सड़क पर सरपट भाग रही बसों के खिड़कियों से दूर आसमानों में बादल की आकृति कभी हमें मोहित कर रही थी तो कभी अचंभित। कभी शहर से दूर घाटियों के बीच भागती बस और उन बसों में बैठे हम दूर छूटते शहर की तरह सारे काम-काज के झंझट को पीछे छोड़े जा रहे थे और मध्य-मध्य में ठण्डी हवाएं का झांका हमें और हर्षित और उल्लासित कर रही थी। इस तरह देखते-ही-देखते हमारी बसें दोपहर होते-होते अपने गंतव्य स्थल के करीब पहुँच गईं।

हमारा गंतव्य स्थल समुद्र से लगभग 1111 मीटर की ऊँचाई पर थी, और हम उस पहाड़ की चोटी की ओर सर्पिले मार्ग से होते हुए बढ़ चले। जैसे ही हम कुछ ऊपर पहुँचे थोड़ी हल्की सी बारिश और उस बारिश के बूँदों का गिरना जैसे प्राकृति भी हमारा अभिवादन कर

रही हो और उस पर पहाड़ी की वह ठण्डी हवा सब कुछ मन को मोह लेने वाला था। इस बीच कुछ ही देर में हमारी बसें पहाड़ी के ऊपर बसे नगर के बीच एक रिजॉर्ट (पीटर्स पार्क) पर रुकी। वहाँ हमलोगों ने दोपहर का भोजन किया। प्रकृति के गोद में बसें इस विश्राम स्थल की छटा सच में अत्यंत मनोरमणी थी। जिधर भी निगाह दौड़ाया जाए उधर ही कुदरत का अद्भुत नज़ारा, कहीं ऊँची-ऊँची पहाड़ी की चोटी तो कहीं चोटियों के बीच से गुजरते बादलों की रैलगाड़ी। एक दम से मन को मोह लेने वाला दृश्य था। रिजॉर्ट भी बेहद खुबसूरत था जिसमें बच्चों के लिए झूला, बगीचा, स्वीमिंग पूल और अन्य सुविधाएं उपलब्ध थी। भोजन के उपरांत हमलोगों ने थोड़ा सा विश्राम किया और सायं 4 बचे के करीब फिर से हमलोग नेशनल पार्क और नौका विहार के लिए अपने-अपने बसों में सवार हो गए। वहाँ एक बड़ी सी झील में हमलोगों ने नौका विहार का आनन्द लिया और उसके बाद नेशनल पार्क की तरफ बढ़ गए। नेशनल पार्क में तरह-तरह के पेड़-पौधों के बीच किस्म-किस्म की फूलों के बगीचे और उसमें उन फूलों के देख कर मन बहुत खुश हुआ। एक ऐसा वातावरण जहाँ केवल चिडियों की चहचहाअट भी पूरे माहौल को शांत कर रही थी। मन अत्यंत शांत हुआ और फिर से हम अपने विश्राम स्थल की ओर निकल पड़े। यहाँ लैटने के बाद पुनः सभी लोग विश्राम स्थल पर पहुँचे और वहाँ हल्का चाय-नाश्ता के बाद सब एक दूसरे से वार्तालाप में मशगुल हो गए। इस बीच शाम भी ढल गई और रात भी चढ़ने लगी। हल्की हल्की बारिश भी हो रही थी कि इसी बीच रात्रि भोजन एवं रंगारंग कार्यक्रम भी आरंभ हुया।

सबसे पहले बच्चों का म्यूजिकल कार्यक्रम शुरू किया गया फिर धीरे-धीरे डी.जे. के बीट पर हमसब थिरकने लगे। इस रंगारंग कार्यक्रम ने कार्यालय में व्याप्र प्रोटोकॉल को पूरी तहर से मिटा दिया लोग खुल के एक दूसरे से मिलने लगे और धून पर थिरकने लगे। सब एक समान ! क्या अधिकारी क्या कर्मचारी कोई भेद न रहा। सभी कार्यक्रम में भाग लेकर कार्यक्रम का लुफ्त उठाने लगे। कार्यक्रम के पश्यत हमलोगों ने भोजन किया और विश्राम कक्ष की ओर बढ़ चले। रात की हल्की बारिश के कारण रात ठण्डी और आरामदायक रही। प्रातः काल उठे तो मैं अपने मित्रों के साथ पर्वतारोहन के लिए निकल पड़ा। सुबह येलागिरी की पहाड़ियों में शीलत हवा के झोंके, पक्षियों का चह-चहाना, क्षितिज की पटल पर सूर्य की लालिमा का फैलना और जंगल एवं वनस्पतियों को देखकर मन अति प्रसन्न हो गया। मानो मैं उनमें कहीं खो सा गया।

पर्वतारोहण से लौटने के बाद सभी लोग चाय-नाश्ता कर के तैयार हुए और अपने अंतिम पड़ाव "जलगमपराई झरने" की ओर निकल पड़े। जहाँ हमलोगों ने प्राकृतिक झरने का लुफ्त उठाया और उसी के पास में स्थित मंदिर में पूजा अर्चना किए और दोपहर के भोजन के लिए निकल चले। दोपहर की भोजन की व्यवस्था पास के एक स्थान पर किया गया और हम सभी भोजन कर के अपने घर के तरफ रवाना हो चले।

यह यात्रा मेरे जीवन की सभी अविस्मरणीय एवं अकल्पनीय यात्राओं में से एक थी।

\$\$\$\$\$



गुरु-शिष्य

रवि कुमार - II

लेखापरीक्षक

सन 1979 में पाकिस्तान के भौतिकविद डॉक्टर अब्दुस सलाम ने नोबेल प्राइज जीतने के बाद भारत सरकार से रिक्वेस्ट की कि उनके गुरु प्रोफेसर अनिलेंद्र गांगुली को खोजने में उनकी मदद करें। प्रोफेसर अनिलेंद्र गांगुली ने डॉक्टर अब्दुस सलाम को लाहौर के सनातन धर्म कॉलेज में गणित पढ़ाया था। प्रोफेसर अनिलेंद्र गांगुली को खोजने के लिए डॉक्टर अब्दुस सलाम को 2 साल का इंतजार करना पड़ा और फ़ाइनली 19 जनवरी 1981 को कलकत्ता में उनकी मुलाकात प्रोफेसर गांगुली से हुई।

प्रोफेसर गांगुली विभाजन के पश्चात लाहौर छोड़कर कलकत्ता में शिफ्ट हो गए थे। जब डॉक्टर अब्दुस सलाम प्रोफेसर गांगुली से मिलने उनके घर पहुंचे तो देखा कि वे बहुत वृद्ध और कमज़ोर हो चुके थे। यहाँ तक कि उठ कर बैठ भी नहीं सकते थे। उनसे मिलकर डॉक्टर अब्दुस सलाम ने अपना नोबेल मेडल निकाला और उनको देते हुए कहा कि सर यह मेडल आपकी टीचिंग और आप द्वारा मेरे अंदर भरे गए गणित के प्रति प्रेम का परिणाम है।

अब्दुस सलाम ने वह मेडल गांगुली के गले में ढाल दिया और कहा सर यह आपका प्राइज है, मेरा नहीं। पाकिस्तान के भौतिकविद इस जेस्चर ने बताया कि भले ही देश विभाजित हो गया था लेकिन उसके मूल्य और उसकी आत्मा ज़िंदा थी। किसी भी विभाजित सीमा के पार जाकर अपने गुरु को इस तरह से ट्रिब्यूट देना बताता है कि यही वह सर्वथ्रेष्ठ पुरस्कार है जो एक गुरु अपने शिष्य से अपेक्षा कर सकता है।



कल्याण अनुभाग गतिविधियाः 2021-22

विषयः- 2021-22 वर्ष के लिए कल्याण कक्ष गतिविधियां-संबंधी

कल्याण कक्ष द्वारा निम्नलिखित कल्याण गतिविधियों का जिम्मा लिया गया:-

खेल-कूद गतिविधियां-

विभिन्न खेलों जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, टेबल टैनिस, कैरम, बैटमिंटन और हॉकी से संबंधित खिलाड़ियों को अनेकों राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में सम्मलित होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और कल्याण कक्ष समय पर उनके अग्रिम की प्राप्ति के लिए तत्काल सक्षम बनाने हेतु अनुमतियों के प्रसंस्करण द्वारा उनकी सहायता करता है जिससे बिना किसी परेशानी के खेल-कूद प्रतियोगिताओं में सम्मलित होने में सहायता मिलती है।

खेल-कूद प्रतियोगिता के संयोजक रूप में प्रमाण (लेप-1) के साथ अई ए एवं ए डी इंटर जोनल हॉकी टूर्नामेंट 2021-22 का सफल आयोजन किया गया। उत्तर, दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम जोन से खिताब के लिए प्रतियोगिता कर रही आठ टीमों के साथ 18.04.2022 से 22.04.2022 तक खेल-कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। दिल्ली (लेखापरीक्षा) खेल-कूद प्रतियागिता में विजयी रहा। अई ए एवं ए डी में पहली बार, इंटर जोनल हॉकी फाइनल का ऑनलाइन सीधा प्रसारण दिखाया गया था।

कोविड-19 महामारी गतिविधियां- महामारी के दौरान कार्यालय में निम्नलिखित उपाय किए गए थे- कार्यालयों में स्वच्छता प्रबंध, कर्मचारी को प्रत्येक माह कबसुरा कुडिनीर अथवा निलावेम्बु कुडिनीर की पूर्ति जो कि इम्यूनिटी बूस्टर हैं, सभी कर्मचारियों को सेनिटाइजर प्रदान करना, परिवार सदस्यों सहित सभी कर्मचारियों को अरसेनिक एलबम-30 (होमियोपेथी दवा) प्रदान करना, अनेकों स्क्रीनिंग केंद्रों पर कोविड-19 जांच के लिए कर्मचारी की सहायता, उचित उपचार/अस्पताल/दवाइयां जैसे रैमडिसीवर आदि की प्राप्ति में कर्मचारी की सहायता।

कोविड-19 महामारी के दौरान कर्मचारियों को सहायता

पहली और दूसरी लहर में गंभीर जटिलताओं के साथ कई प्रभावित कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्यों को देखा गया जैसे सांस लेने में परेशानी, तेज बुखार, सीने में दर्द, निमोनिया जिसके कारण अस्पताल में भर्ती होना आदि। कार्यालय में 219 पॉजीटिव कोविड-19 मामले रिपोर्ट किए गए जनमें से 5 पदधारीयों ने वायरस के आगे घुटने टेक दिए।

विभिन्न तरीकों से कर्मचारियों को सहायता प्रदान की गई थी।

- i.) विभिन्न स्क्रीनिंग केंद्रों पर कर्मचारियों के लिए कोविड-19 जांच को अंजाम दिया गया।
- ii.) उचित उपचार/अस्पताल/दवाइयां जैसे रैमडिसीवर आदि की प्राप्ति।
- iii.) अधिकारियों के लिए रक्त जांच हेतु गृह-ग्रहण
- iv.) होम क्वारंटाईन सहायता
- v.) दूसरी लहर के दौरान ऑक्सीजन सिलेंडर और अस्पताल में भर्ती प्राप्त करना
- vi.) कार्य के लिए पदधारियों की यात्रा की सुगमता सुनिश्चित करने के लिए अनुमति पास जारी किए जाना।
- vii.) बिना देरी के चिकित्सा अग्रिम का प्रसंस्करण।

viii.) कार्यालय की तरफ से रु 25000/- की तत्काल मृत्यु राहत और रु 5000/- या रु 3000/- योग्यता के अनुसार परिवार के सदस्यों को सौंपे गए थे। सेवा निवृत्त लाभ बिना देरी के प्रसंस्करण किए गए थे और मृत्यु प्राप्त व्यक्ति के परिवार के सदस्यों को सौंपे गए।

ix.) एक मामले में, मृत्यु प्राप्त एक पदधारी के दाह संस्कार में कलयाण कक्ष ने सहायता की थी।



बीमारी के विषय में कर्मचारी सदस्यों के बीच जागरूकता पैदा करना

संचारी रोग पर स्वास्थ्य जागरूकता व्याख्यान संचालित किया गया था विशेषतः कोविड-19 के निवारण पर और श्री जी.लोगनाथन स्वास्थ्य निरीक्षक डी पी एच-आई ई सी की सहायता सहित व्याख्यान श्री. सी.मरिया अरपुत्ता सामी,जिला स्वास्थ्य शिक्षक सार्वजनिक स्वास्थ्य और निवारक दवा निदेशालय-आई ई सी, चेन्नै 600018 द्वारा दिया गया।

टीकाकरण शिविर:- को-वैक्सिन एवं कोविशील्ड लगाने के लिए दिनांक 26.03.2021, 29.04.2021, 16.07.2021 और 22.10.2021 पर कोविड-19 के लिए टीकाकरण शिविर का प्रबंध किया गया था जिसमें कुल 946 कर्मचारियों को लाभ की प्राप्ति हुई। उसी प्रकार से, शाखा कार्यालय मदूरै में भी टीकाकरण शिविर का प्रबंध किया गया था और कुल 47 कर्मचारियों को लाभ की प्राप्ति हुई। दिनांक 18.02.2022 को चेन्नै कार्यालय में बूस्टर शिविर संचालित किया गया था और कुल 123 कर्मचारियों को लाभ की प्राप्ति हुई।

नेत्र जागरूकता शिविर:- नेत्र जागरूकता शिविर का दिनांक 23.09.2021 और 24.09.2021 को 7वां तल पर डॉ.अग्रवाल आई हॉस्पीटल,चेन्नै द्वारा आयोजन किया गया था।

शिविर के दौरान डॉ.अग्रवाल आई हॉस्पीटल द्वारा निम्नलिखित जांच की गई:-

नेत्र दृष्टि को मापने हेतु ऑटो रिफ्रैक्शन

नेत्र दबाव को मापने हेतु ऑटो एन सी टी

विवर्णता- ईशीहारा क्लर वीजन स्क्रीनिंग चार्ट जो कि व्यक्ति के विवर्णता का पता लगाता है;

सबजैक्टिव रिफ्रैक्शन जो कि एक योग्य ऑप्टोमेट्रिस्ट द्वारा किया जाता है जो वर्तमान दृष्टि, ग्लास पॉवर में परिवर्तन और नयी ग्लास पॉवर का निर्धारण करता है। इसके अलावा, प्रमुख रोग जैसे मोतियाबिंद को भी पहचाना गया था।

स्वास्थ्य परामर्श और जीवन शैली परामर्श सेवा कर्मचारी सदस्यों को दी गई थी।

एक नेत्र-चिकित्सक, एक समन्वयक और चार ऑप्टोमेट्रिस्ट की एक टीम द्वारा नेत्र जागरूकता शिविर का संचालन किया गया था।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोहः- इस वर्ष एक अभूतपूर्व सप्ताह भर चलने वाला महिला दिवस समारोह आयोजित किया गया था जिसमें कई खेलों का आयोजन शामिल था जैसे स्मृति खेल, पिरामिड में पेपर कपस की व्यवस्थापन, बलून शूटिंग, संगीत प्रतियोगिता, तर्क-वितर्क, फोटो प्रदर्शनी। गत वर्षों के दौरान व्याख्यान, निबंध लेखन और सुवक्त्ता प्रतियोगिताएं आयोजित किए गए थीं। लगभग 150 महिला कर्मचारी सदस्यों ने समारोह में भाग लिया था और इसने महिला कर्मचारी और पदधारीयों को प्रोत्साहित और प्रेरित किया था।



मोबाईल ए टी एम सुविधा:-- कार्यालय परिसर में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की मोबाईल ए टी एम सुविधा प्रदान करने हेतु कल्याण कक्ष द्वारा प्रबंध किया गया था।

अस्पताल गतिविधियां- बिना समय सीमा के किसी भी स्वास्थ्य समस्या वाले कर्मचारी की मदद करके त्वरित कार्रवाई की जाती है। कल्याण कक्ष बीमार कर्मचारी को अस्पताल में भर्ती कर सहायता करता है यदि वे कार्यालय समय के दौरान बीमार पाए जाते हैं। अन्य समय पर कल्याण कक्ष बीमार कर्मचारी के लिए अस्पताल की व्यवस्था करने में सहायता करता है और चिकित्सा अग्रिम प्राप्त करने में मदद करता है। फोन पूछताछ के सिवाय अस्पताल द्वारा कर्मचारी को दिए गए उपचार की प्रक्रिया के बारे में अवगत होने के लिए अस्पताल दौरा भी किया जाता है। बीमार कर्मचारी द्वारा किसी भी अन्य प्रकार की सहायता कि मांग और कई मामलों में परिवार के सदस्यों को भी उनकी क्षमता के अनुसार सहायता प्रदान की जाती है।



लोट-पोट



रवि कुमार - II
लेखापरीक्षक

1) मास्टर- भारत की सबसे खतरनाक नदी कौन सी है?

पप्पू - भावना, इसमें सब बह जाते हैं...!!!
फिर पप्पू को नदी के रास्ते स्कूल से भागना पड़ा।

2) लड़की - स्टेशन तक के कितने पैसे लोगे?

रिक्षावाला - मैडम बीस रुपये...
लड़की (हैरान सा मुँह बनाते हुए) - स्टेशन के बीस रुपये?

रिक्षावाला - हां मैडम, स्टेशन पूरा दो किलोमीटर है यहां से...
लड़की (हाथ से इशारा करते हुए) ये तो रहा स्टेशन!!!

रिक्षावाला - मैडम हाथ पीछे कर लो, कही रेल के नीचे ना आ जाये...!!!

3) संता ने पूछा बंता से...
बंता भैया, जिसको सुनाई नहीं देता, उसको क्या कहते हैं?

बंता बोला - कुछ भी कह लो यार, जब उसे सुनाई ही नहीं देता...!!!

4) साइकिल वाले एक आदमी ने छगन
को जोरदार टक्कर मार दी.!!

आदमी : आप बहुत खुशकिस्मत हैं.!!

छगन : अबे, एक तो मुझे साइकिल मारी
और ऊपर से कह रहा है कि मैं खुशकिस्मत हूँ। कैसे?

आदमी : आज मेरी छुट्टी है वरना
मैं तो ट्रक चलाता हूँ.!! "

5) जब बारिश हो तो बाहर बैठा करो, तुम्हारी किस्मत खुल जाएगी।

किस्मत न भी खुली तो क्या हुआ, कम से कम.....तुम्हारी शक्ति ही धुल जाएगी।

6) मोन्टू: तुम्हारी आँख क्यों सूजी हुई है?

बन्टू : कल मैं अपनी पत्नी के जन्मदिन पर केक लेकर गया था

मोन्टू : लेकिन इसका आँख सूजने से क्या संबंध है?

बन्टू : मेरी पत्नी का नाम तपस्या है

लेकिन कैक वाले बेवकूफ दुकानदार ने लिख दिया

"हैप्पी बर्थ डे समस्या"

7) संजना तीसरी बार ड्राइविंग लाइसेंस के लिए इंटरव्यू देने पहुंची

ऑफिसर- अगर एक तरफ आपके पति हो और दूसरी तरफ

आपका भाई हो तो आप क्या मारोगी ?

संजना - पति

ऑफिसर- अरे मैडम आपको तीसरी बार बता रहा हूँ कि

आप ब्रेक मारोगी.



